आसमान साफ रहने है।

सूर्य 5:51 (अस्त) 6:04 (उदय-कल)

तापमान 34.8 (अधि.) 24.2 (न्यून.)

आर्द्रता 83 (अधि.) 63 (न्यून.)

कानपुर जागरण

कानपुर, 6 अक्टूबर 2014

जलने के बाद भी 'सता रहा' रावण

विशेष

दैनिक जागरण

- पुतले जलाने से वायुमंडल में बढ़ा 13 फीसद प्रदूषण
- अस्थमा, कैंसर, एलर्जी जैसी बीमारियों को न्योता

डॉ. सुरेश अवस्थी, कानपुर

विजया दशमी को बुराई का प्रतीक रावण को फूंक दिया गया पर कहते हैं कि बुराई तो बुराई है, फूंकने पर भी अपना दुष्प्रभाव छोड़ जाती है। यही हुआ, रावण जमीन पर तो फुंका पर आसमान (वायुमंडल) में 13 फीसद से अधिक प्रदूषण बढ़ा गया। इसे कम होने में समय लगेगा। इस बीच वह लोगों को बीमारियां भी बांटेगा।

आईआईटी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के सेंटर फॉर इनवायरमेंटल साइंस में रिकार्ड किए आंकड़ों की मानें तो तीन अक्टूबर को कानपुर व उसके आसपास के शहरों में रावण, कुंभकर्ण व मेघनाद के हजारों पुतले फूंके गए तथा आतिशबाजी हुई। उससे उठने वाले धुएं से निकले ब्लैक कार्बन व दूसरे खतरनाक प्रदूषित कण (एरोसॉल) वायुमंडल में इस कदर छाए कि 4 अक्टूबर को प्रदूषण का स्तर 13.33 फीसद बढ़ गया। वैज्ञानिक बताते हैं कि इन हानिकारक कणों में ब्लैक कार्बन, आर्गेनिक कार्बन, धूल व आतिशबाजी से निकले रसायनिक पदार्थों के कण रहते हैं।

वायुमंडल में प्रदूषण की तस्वीर

तिथि	औसतन एरोसॉल
1 अक्टूबर	0.035
2 अक्टूबर	0.053
3 अक्टूबर	0.065
4 अक्टूबर	0.075

(माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर)

क्या होती है हानि

वायुमंडल में कार्बन व दूसरे पार्टिकल्स (ब्लैक कार्बन, नाइट्रेट व सल्फेट) बढ़ने से सूरज की किरणें भूमि तक निर्बाध रूप से नहीं आ पातीं जिसका उजाले पर पर विपरीत प्रभाव पढ़ता है। प्रदूषित कणों के हवा में होने से अस्थमा, आंखों में जलन, एलर्जी, खांसी, सांस लेने में तकलीफ व फेफड़े की अन्य बीमारियां होने का खतरा रहता है। हानिकारक रासायनिक कणों के होने से कैंसर का भी खतरा हो सकता है।

कूड़ा जलाने से भी बढ़ा प्रदूषण

दो अक्टूबर को गांधी जयंती पर लोगों ने सफाई की परंतु कूड़े को कई जगह जलाया गया। वैज्ञानिक बताते हैं, इससे वायुमंडल में 18 फीसद प्रदूषण बढ़ा। आईआईटी की आंकड़े रिकार्ड करने वाली मशीन ई-बैम के संकेत देती है कि दो अक्टूबर को कूड़ा जलाने से देर शाम तक वायुमंडल में प्रदूषित पार्टिकल्स में 0.018 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर की वृद्धि हुई।

कूड़ा जलाने व आतिशबाजी से वायुमंडल प्रदूषित होता है जिसका दुष्प्रभाव सभी को झेलना पड़ता है। कूड़ा और प्लास्टिक को जलाने पर रोक लगनी चाहिए। रावण के पुतलों को फूंकने का प्रदूषण रहित इलेक्ट्रानिक तरीका निकालना होगा।

–डॉ. सच्चिदानंद त्रिपाठी, पर्यावरण विज्ञानी आईआईटी